राज कॉमिक्स

मूल्य 15.00 संख्या 148

बांकेलाल और शादी का षड्यंत्र

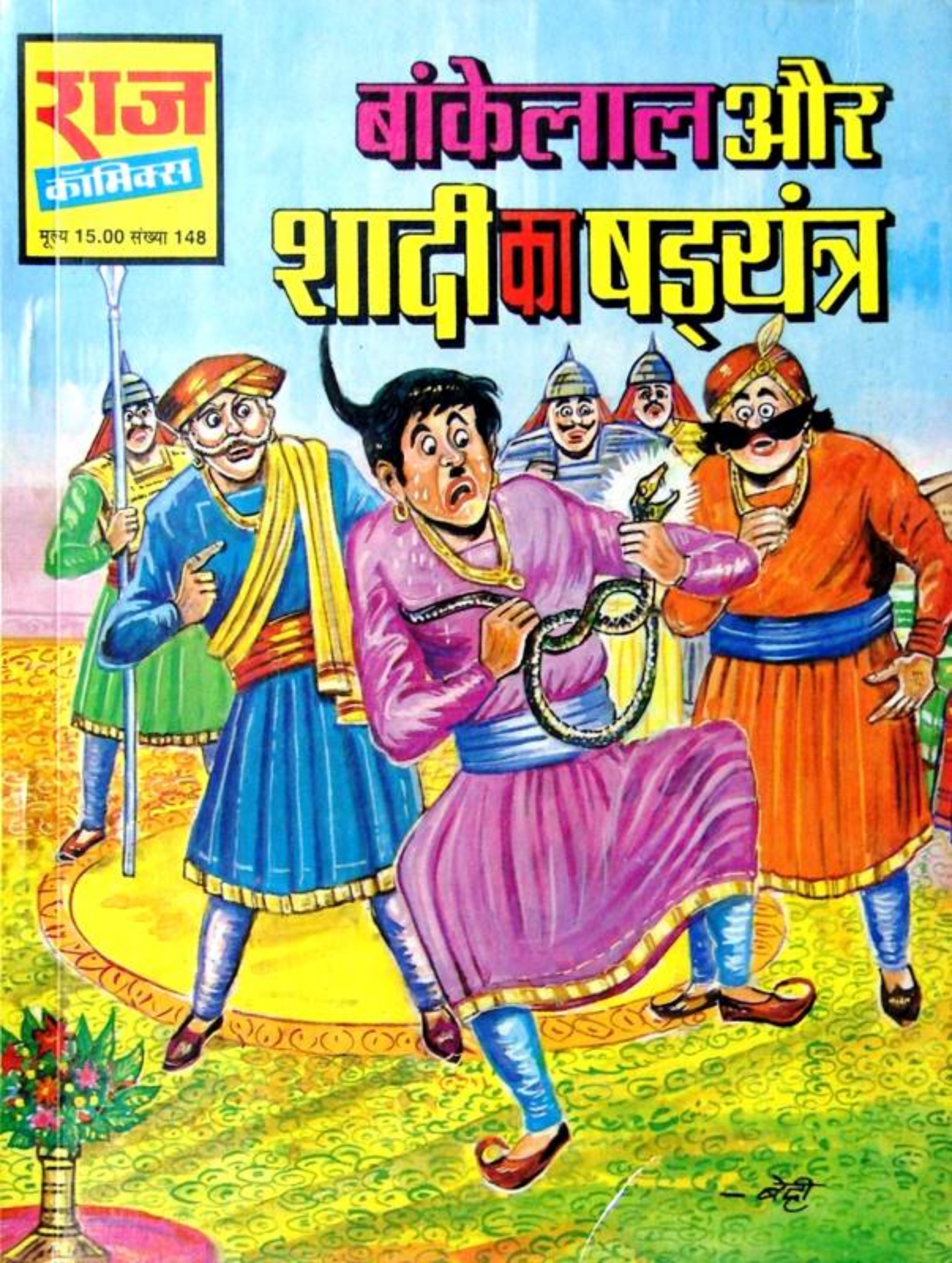

बांकेलाल और शादी का षड्यन्त्र

चित्रांकन: बेदी ▫ कहानी: तरुणकुमार वाही ▫ सम्पादन: मनीष चन्द्र गुप्त

यह सुनकर महामंत्री धर्मसिंह ने पूछा–

किन्तु महाराज! यह किस देश का राजा है, अगर हमें पता चल जाए तो हम भी बांकेलाल की मदद से उस राजा को सबक सिखा सकते हैं।

यही तो मुश्किल है। महामंत्री जी। षड्यंत्र का रूपरंग ही तो हमारे गुप्तचरों को मालूम नहीं पड़ रहा।

वरन्तु गुप्तचर पूरी चेष्टा कर रहे हैं। उस देश का नाम पता चलते ही हम बांकेलाल जी को अवश्य कष्ट देंगे।...

... क्यों बांकेलाल जी? क्या आप दुश्मनों से टक्कर लेने के लिए तैयार हैं?

ज...जी हां महाराज! भला हमारे महाराज के अलावा इस सिंहासन पर और कौन बैठ सकता है।...

... आप बिल्कुल फिक्र मत कीजिए महाराज। मैं दुश्मनों को उनकी नानी याद करा दूंगा।

और आप भी अभी से अपने दिन गिनने आरम्भ कर दीजिए महाराज, क्योंकि अब आप बांकेलाल के हाथों हैं... हें हें...

महाराज, बांकेलाल जी जब तक हमारे साथ हैं, दुश्मनों की क्या मजाल कि हमारे राज्य की ओर आंख उठाकर भी देखे।

बोलो बांकेलाल की...

जय

बांकेलाल नहीं कमबख्तो... राजा बांकेजी की जय बोलो।

और फिर एक रात–

इस चमत्कारी दवा के पेट में जाने के दो ही घण्टे पश्चात प्राणी गहरी नींद सो जाता है।

...यह सारा खाना आज रात के पहरेदारों के लिए बन रहा है।

खाना खाते ही सब गहरी नींद में होंगे।

भोजन में दवा मिलाने के बाद बांकेलाल अपने कक्ष में आ गया–

आज रात मैं आराम पूर्वक अपनी योजना को कार्यरूप दे डालूंगा।

भगवान ने चाहा तो कल सुबह तक मैं राजा बन जाऊंगा।

बांकेलाल जागती आंखों से ख्वाब देखने लगा–

महाराज बांकेलाल जी की....

जय

उसी रात–

हर तरफ शांति छाई हुई है। लगता है पहरेदार मेरी दवा मिला भोजन खाकर गहरी नींद सो चुके हैं।

बांकेलाल राजा विक्रमसिंह के शयनकक्ष के बाहर पहुंच गया–

ओह, पहरेदार दीवार से लगे सो रहे हैं। वाह, मेरी खोपड़ी ने भी क्या शानदार योजना बनाई है।

वह द्वार खोलकर चुपचाप भीतर आ गया–

वह रहे महाराज विक्रमसिंह। हा... हा... हा। अब इस खंजर को मैं इनके सीने में भोंककर इनकी जीवनलीला का अंत कर दूंगा। हा... हा... हा...

दबे पांव महाराज के पलंग के निकट पहुंचकर उसने अभी खंजर वाला हाथ ऊपर किया ही था कि–

अरे! यह क्या? पिछवाड़े की खिड़की के रास्ते इस समय कौन भीतर आ रहा है?

बांकेलाल की ऊपर की सांस ऊपर और नीचे की नीचे रह गई–

हे भगवान! अगर किसी आने वाले ने मुझे इस अवस्था में इस खंजर के साथ देख लिया तो मैं तो मुफ्त में ही मारा जाऊंगा। न जाने वह कौन होगा?

भाग बेटा बांकेलाल! छिप जा। वरना तेरी खैर नहीं।

बांकेलाल बेचारा इन्तजार ही करता रहा, लेकिन खिड़की से कोई मानव भीतर नहीं आया बल्कि—

इधर बांकेलाल ने जब कुछ देर इन्तजार करने के पश्चात् भी किसी को भीतर आते न देखा—

लगता है, मैं बेकार ही डर गया था। खिड़की अवश्य हवा से हिली होगी।

यह सोचकर वह पलंग के नीचे से बाहर निकलने लगा कि तभी उसका हाथ सांप से टकरा गया—

ओह! यह क्या है?

अंधेरे में टटोलते हुए उसने सांप को रस्सी समझ कर उठा लिया—

रस्सी? रस्सी का यहां क्या काम है?

तभी उसके दिमाग में एक अन्य विचार कौंधा—

क्यों न इसी रस्सी का फंदा बनाकर महाराज के गले में कस दूं। आवाज तक नहीं होगी।

इतना सोचकर उसने खंजर वापिस जेब में रखा और सांप की रस्सी का फंदा बनाकर वह महाराज की ओर बढ़ा—

हा हा हा केवल कुछ सांसें और भर ले राजा विक्रमसिंह!

लेकिन ठीक उसी क्षण एक झटके के साथ द्वार खुल गया। महामंत्री धर्मसिंह ने अपने सैनिकों के साथ वहां प्रवेश किया और भीतर बांके पर नजर पड़ते ही महामंत्री आश्चर्य से बोले—

अचानक महामंत्री की निगाहें बांके के हाथ में पकड़े सांप पर पड़ीं और वह चिल्लाया—

बांकेलाल ने तुरन्त सांप को एक तरफ उछाल दिया। एक सैनिक ने भाले की नोक पर उसे उठा लिया—

राजा विक्रमसिंह के पूछने पर महामंत्री बोला—

फिर अचानक बांकेलाल बात पलटकर बोला—

मैं भी उसी साथे को देखकर ही यहां पहुंचा था। और जब यहां पहुंचकर मैंने इस सर्प को आपके पलंग के ऊपर पाया तो मुझे समझते देर न लगी महाराज कि यह सर्प किसने कक्ष में फेंका। और महाराज, मैंने सर्प को पकड़ लिया।

किन्तु बांकेलालजी, फिर आप सर्प को देख कर एकाएक चौंक क्यों पड़े थे?

वो... वो दरअसल एकाएक आपके आ जाने से मैं भूल ही गया था कि मेरे हाथ में सांप है।

तभी राजा विक्रमसिंह महामंत्री की ओर मुड़कर बोले—

यह सब क्या चक्कर है महामंत्री? हमारी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा।

महाराज, शायद वही साथा आपको समाप्त करने के इरादे से इस सांप को यहां फेंक गया था।...

... अगर आज बांकेलालजी न होते तो शायद आप...

ओह, इतनी बड़ी साजिश! लेकिन ये पहरेदार कहां मर गए थे?

उन्हें कोई तीक्ष्ण बेहोशी की दवा खिला दी जान पड़ती है, महाराज। वे सब बेहोश पड़े हैं।

ओह!

बांकेलाल, तुमने हमारे प्राण बचाकर हम पर बहुत बड़ा उपकार किया है। हम तुम्हारे ऋणी हैं।

क्यों शर्मिंदा करते हैं महाराज! यह तो मेरा फर्ज था।

बाल-बाल बचा।

उस रात्रि की घटना के पश्चात तो बांकेलाल जैसे महाराज की आंखों का तारा बन गया। वे हर पल उसी की तारीफ के पुल बांधा करते। फिर एक दिन–

अगले दिन प्रातः ही वे रथ पर सवार होकर शिकार खेलने चल पड़े-

देखो बांकेलाल! आज मौसम भी शिकार के अनुकूल है।

जी हां, महाराज!

और मौका भी अच्छा है। आज शाम तक आपके सिर का मुकुट मेरे सिर पर शोभायमान होगा महाराज।

जब महाराज का ध्यान किसी शिकार पर होगा, तब मैं तेज गति से चलते हुए रथ से महाराज को धक्का दे दूंगा।

तभी राजा विक्रमसिंह चीख पड़े-

अरे, हिरण! रथ तेज दौड़ाओ बांकेलाल! अन्यथा हिरण हमारे हाथ से निकल जायेगा।

अभी लीजिये महाराज!

बांकेलाल ने घोड़ों पर चाबुक बरसानी आरम्भ की-

और तेज, हिरण हाथ से नहीं निकलना चाहिए।

सड़क सड़क

जबकि कुछ ही दूर-

सावधान! रथ इधर ही आ रहा है।

जैसे ही वह सामने से गुजरे तुम राजा का निशाना लेकर तीर छोड़ देना।

उधर बांकेलाल—
यही मौका है।
रथ पूरी गति से दौड़ रहा है। गिरने के बाद महाराज की एक भी हड्डी साबुत नहीं बचेगी।
यह गया मेरा तीर

मन ही मन यह सोचते हुए एकाएक बांकेलाल ने लगाम छोड़कर महाराज को कसकर पकड़ लिया—
अरे! बांकेलाल। यह क्या कर रहे हो?
तेरा समय पूरा हो गया राजा।

लेकिन इससे पूर्व कि वह महाराज को धक्का दे पाता, एक तीर हवा में सरसराया और—
सर ई ई
आह !

बांकेलाल के मुंह से एक दर्दभरी चीख निकल गई—
आऽऽह महाराज
भागो..
ओह, तो उन घुड़सवारों ने तीर फेंका था। मैं अभी उन्हें मजा चखवाता हूं।

क्रोध में भरे महाराज विक्रमसिंह ने तुरन्त दो तीर एक साथ धनुष पर रखे और घुड़सवारों की ओर निशाना साधकर छोड़ दिया। अगले ही पल वे दोनों तीर उन दोनों घुड़सवारों के शरीरों में धंस गए—

आह मरा!

खच्च

खच्च

इधर राजा विक्रमसिंह ने तुरन्त घोड़ों को काबू में किया और रथ को वापिस महल की ओर मोड़ दिया—

घबराओ नहीं बांकेलाल! हमने उन दोनों को समाप्त कर दिया है।

आ...ह...

और तुम्हारे कंधे से तीर भी हमने निकाल फेंका है।

हे भगवान! यह तू मेरे साथ कैसा छल कर रहा है। अगर मुझे पहले ही बता देता कि कोई तीर आकर राजा को लगने वाला है तो मैं उसे धक्का देने की क्यों सोचता।

आह!

बांकेलाल! अपने प्राणों की परवाह न करते हुए तुमने आज फिर हमारे प्राण बचा लिये।

यह सुनते ही बांकेलाल मन ही मन जलभुन गया—

अरे दुष्ट राजा! मैं तो तुझे समाप्त करने की सोच रहा था कमबख्त। अगर इस समय मैं घायल न होता तो अभी तुझे चलते रथ से धक्का दे देता।

आ...ह!

फिर महल पहुंचकर बांकेलाल की मरहम-पट्टी कर दी गई—

बांकेलाल इन्सान नहीं भगवान का अवतार है, महाराज।

ठीक कहते हो महामंत्रीजी।

भगवान नहीं मूर्ख, शैतान का अवतार कह।

उसके बाद कुछ दिनों तक तो बांके पलंग से उठ भी न पाया। फिर एक दिन—
बांके जी, क्या मैं अन्दर आ सकता हूं?
अगर कोई आवश्यक कार्य है तो आओ, अन्यथा हमारे आराम में विघ्न मत डालो।
कार्य तो आवश्यक ही है बांकेलालजी।
कहो क्या काम है?
थाल में स्वर्ण मुद्राएं या हीरे-मोती तो नहीं लाया ये मेरे लिए?
महाराज ने आपकी सेहत के लिए यह तोहफा तुरन्त ग्रहण करने के लिए भेजा है।
ओह!
न जाने इसमें क्या होगा?
बांकेलाल ने जब तोहफे पर ढका कपड़ा हटाकर देखा—
सिर्फ फूलों का एक हार! लानत है ऐसे तोहफे पर।
किन्तु इस दरबारी के सामने तो इसे ग्रहण करना ही होगा।
किन्तु जैसे ही बांकेलाल फूलों का हार गले में डालने लगा, कि अचानक उसे एक बेहद जोर की छींक आ गई—
आऽऽऽ छी
और फूलों का हार झटके के साथ जमीन पर जा गिरा।

बांकेलाल ने जब फूलों के हार पर मंडराते बिच्छू को देखा तो उसके रोंगटे खड़े हो गए–
बिच्छू... हार में काला भयानक बिच्छू छिपा हुआ था।
अगर मुझे छींक न आती तो यह बिच्छू मुझे काट लेता।
उसने तुरन्त आगे बढ़कर उसे जूते तले मसल दिया।
पोल खुलती देखकर वह दरबारी भागने लगा–
भागो।
ओह तो यह इस कमबख्त की मुझे समाप्त करने की चाल थी। मगर अब मैं इसे नहीं छोड़ूंगा। पाजी... गद्दार...
बांकेलाल ने गुलदान उठाकर उस दरबारी के सिर पर दे मारा–
तड़ाक
आह !
भागता कहां है दुष्ट! जरा बांके से इनाम भी तो लेता जा।
दरबारी अभी संभल भी नहीं पाया था कि बांके ने उसे पीछे से दबोच कर...
...एक पटकनी दे डाली–
चलाथा बांके को बिच्छू से कटवाने।
हाय मरा।

...तुझे शायद नहीं मालूम कि बांके का दूसरा नाम भी बिच्छू है, जिसका काटा पानी भी नहीं मांगता।
मुझे क्षमा कर दो, बांकेलाल!
और तभी बांकेलाल पुनः चौंक पड़ा—
अरे! नकली दाढ़ी?
हुम्म!
ओह, मेरी दाढ़ी! फंस गए!
अब कुछ भी छिपाना बेकार है मक्कार! जल्दी बता तू कौन है अन्यथा अभी मैं सैनिकों को बुलवाकर तुझे लटकवाता हूं फांसी पर।
फां... सी?
फांसी का नाम सुनते ही थर-थर कांपता हुआ वह बांके के कदमों में लेट गया, फिर गिड़गिड़ाता हुआ बोला—
नहीं बांकेलाल जी, मैं आपको सब कुछ सच-सच बता दूंगा। मगर भगवान के लिये मुझे फांसी लगने से बचालो।
ठीक है। अगर तुम सच बोलो तो मैं तुम्हें बचा सकता हूं।
दूसरे ही पल वह उठ खड़ा हुआ और बोला—
मेरा नाम लोटनचन्द है, बांकेलाल। और मैं चन्दनगढ़ के राजा चन्दनसिंह का गुप्तचर हूं।
चन्दनगढ़ के राजा चन्दनसिंह का गुप्तचर??

ओह! इसका मतलब कि इन दिनों महाराज पर जो आक्रमण हुए, वह तुमने करवाए थे।
ज...जी बांकेलालजी।
यह सुनते ही बांके लाल ने लोटनचन्द को एक ओर पटकनी दे डाली—
कमबख्त तेरे कारण ही महाराज दोनों बार मेरे हाथों से बच निकले।
आ... ह
यह बताओ कि चन्दनसिंह आखिर चाहता क्या है? तुम्हारी दुश्मनी तो राजा से है और फिर तुमने मुझे समाप्त करने की चेष्टा क्यों की?
मैं आपको सब कुछ बताता हूं। दरअसल राजा चन्दन-सिंह की एक बेटी है, राजकुमारी कुरुपलता।
आज से छः माह पूर्व की बात है। एक दिन महाराजा चन्दनसिंह का एक लिखित संदेश लेकर मैं राजदूत बनकर राजा विक्रमसिंह के पास पहुंचा—
महाराज की जय हो।
कहो चन्दनगढ़ के राजदूत! राजा चन्दन-सिंह ने हमारे लिए क्या संदेश भेजा है?
आप स्वयं ही पढ़ लें, महाराज।
महामंत्रीजी, आप पढ़िए।
जो आज्ञा महाराज!

महामंत्री धर्मसिंह ने पढ़ना आरम्भ किया—

महाराज विक्रमसिंह को चन्द्रनगढ़ के राजा चन्द्रनसिंह का प्रणाम। महाराज, हमने निश्चय किया है कि अपनी कन्या राजकुमारी कुरूपलता का विवाह आपसे कर दिया जाए। आशा है कि आप इन्कार नहीं करेंगे।

आपका चन्द्रनसिंह

यह सुनते ही राजा विक्रमसिंह क्रोध से बोले—

क्या ? राजकुमारी कुरूपलता ! वह कुबड़ी और लंगड़ी लड़की !

चन्द्रनसिंह की हिम्मत कैसे हुई हमें ऐसा प्रस्ताव भेजने की ?

??

??

महामंत्रीजी, इन राजदूत महाशय से कह दो कि ये तुरन्त यहां से इस मनहूस प्रस्ताव को लेकर चले जाएं। अन्यथा हमें क्रोध आ गया तो बहुत बुरा होगा।

ओह ! महाराज चन्द्रनसिंह का इतना अपमान।

राजा विक्रमसिंह की वे अपमान भरी बातें जब राजा चन्द्रनसिंह के कक्ष में पहुंची—

राजा विक्रमसिंह की ये जुर्रत ! हम भी उससे वह बदला लेंगे कि उसकी सात पुश्तें भी कभी ऐसी अपमानजनक बातें न कहेंगी।

लोटनचन्द ! हम शीघ्र ही राजा विक्रमसिंह की मृत्यु का समाचार सुनना चाहते हैं।

जी महाराज !

मैं उसी दिन विशालगढ़ के लिए रवाना हो गया—

और इस प्रकार बहुत चेष्टाओं के बाद मैं दरबारी के रूप में महल में आ गया और...

लेकिन तुमने मुझ पर हमला क्यों किया मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था?

आपके कारण मैं दो बार महाराज की हत्या करने में असफल हो गया था। इसीलिये मैंने सोचा कि पहले आप ही का काम तमाम कर दूं।

??

एकाएक बांकेलाल का मस्तिष्क तेजी के साथ चलने लगा। उसकी शैतान खोपड़ी हरकत में आ गई—

वो मारा पापड़ वाले को। अगर मैं किसी तरह कुछ ऐसा चक्कर चला दूं कि...

...राजा विक्रमसिंह की बारात तो जाए किसी अन्य राज्य में और बेचारा चंद्रनसिंह बारात के स्वागत की तैयारियां ही करता रह जाए।

बस बन गया काम। तब वह युद्ध होगा कि विक्रम सिंह को कोई ताकत नहीं बचा सकेगी और विशालगढ़ का राजसिंहासन मेरा।

आप क्या सोच रहे हैं बांकेलाल जी?

लोटनचन्द, मैं सोच रहा हूं कि यदि महाराज विक्रमसिंह का विवाह राजकुमारी कुसुमलता के साथ हो जाए तो कैसा रहेगा?

क्या? यही तो चन्द्रनसिंह महाराज भी चाहते हैं।

तो समझो, विवाह हो गया। तुम मेरे सन्देश का इन्तजार करो।

फिर एक दिन जब महाराज विक्रमसिंह अभी दरबार बर्खास्त करके ही हटे थे—

महाराज की जय हो!

अरे, बांकेलाल तुम? कहो, कैसे आना हुआ? सब कुशल से तो है ना!

मुझे मेरा स्वप्न आपके पास खींच लाया है।

स्वप्न? हम समझे नहीं बांकेलाल!

स्वप्न!

महाराज! रात मैंने स्वप्न में आपका विवाह कौशल नरेश की सुपुत्री से सम्पन्न होते हुए देखा।

कौशल नरेश? अरे! आज ही तो उन्होंने अपनी पुत्री के विवाह का प्रस्ताव भेजा है।

क्या?

वाह, बेटा बांके! बन गया तेरा काम तो शायद!

विवाह? परन्तु इसके विषय में तो हमने सोचा ही नहीं।

तो अब सोच लें महाराज! बांकेलाल जी ने समय पर बहुत अच्छी बात कही है। आप कहें तो मैं आज ही विवाह के प्रस्ताव की मंजूरी कौशल नरेश के पास भेज दूं।

फिर बांकेलाल व महामंत्री के बहुत जोर देने पर महाराज इंकार नहीं कर सके—

अब जैसी तुम दोनों की इच्छा। आप कौशल नरेश के पास हमारे विवाह का प्रस्ताव भिजवा दें।

राजकुमारी पुष्पलता तो बहुत सुन्दर भी है।

महामंत्री व बांकेलाल कक्ष से बाहर निकल गए।

इधर एक शाम बांकेलाल अपनी योजनानुसार लोटनचंद के पास पहुंचा और उसे एक लिखित संदेश देकर बोला—

लोटनचंद ! महाराज विवाह के लिए तैयार हो गए हैं। यह संदेश जाकर अपने महाराज चन्द्रनसिंह को दे देना।

क्या सच? यह समाचार सुनकर महाराज फूले न समायेंगे।

और हां, तुम इसी समय चुपचाप चले जाओ।

मैं तुरन्त ही प्रस्थान कर रहा हूं बांकेजी।

लोटनचंद के जाने के बाद—

अब आयेगा मजा। जब बारात के स्वागत की तैयारियां तो चन्द्रनगढ़ और कौशलपुर दोनों राज्यों में होंगी, किन्तु बारात पहुंचेगी केवल कौशलपुर हा...हा... हा !

...महाराज विक्रमसिंह दो पाटन के बीच में बाकी बचा न कोय। विशालगढ़ का राजसिंहासन अब बांके का होय।

इधर कौशलपुर में राजकुमारी पुष्पलता के विवाह की तैयारियां चल रही थीं—

उधर चन्द्रनगढ़ में कुकपलता के विवाह की—

जल्दी करो। उफ। बारात आने का समय हो रहा है और अभी भोजन का इन्तजाम नहीं हुआ।

महामंत्री, कुछ व्यक्ति और इस कार्य में लगा दीजिए। हमें देरी बिल्कुल पसन्द नहीं।

यह विक्रमसिंह भी अजीब आदमी है। कल शाम ही विवाह का प्रस्ताव भेजा और आज शाम बारात लेकर आ रहे हैं। कुछ समय और दे देते तो ऐसा शानदार स्वागत करता कि देवता भी देखकर प्रसन्न हो उठते।

अरे भई। जल्दी करो। द्वार पर फूलों की लड़ियां लगा दो। मार्ग में इत्र बहा दो। स्वागत में किसी किस्म की कमी नहीं रहनी चाहिए।

जय जी महाराज।

महाराज चन्द्रभान सिंह मानो प्रसन्नता से पागल हुए जा रहे थे।

राजकुमारी कुसुमलता को उसकी सखियां तैयार कर रही थीं—

आज तो राजकुमारी के भाग्य जाग गए हैं।

अरी हट, राजकुमारी के भाग्य सोये कब थे।

लाखों में एक है हमारी राजकुमारी

राजा की आयेगी बारात... रंगीली होगी रात...

और नाचती-गाती बारात कौशालपुर की ओर चल पड़ी—

कुछ दूर चलने के बाद मुझे बीमारी का बहाना बनाकर यहीं ठहरना है। भला युद्ध के मैदान में जाकर मरना है क्या?

वाह! सब कितने प्रसन्न दिखाई पड़ रहे हैं।

उधर पूरी तैयारी के साथ विशालगढ़ में राजा विक्रमसिंह को हाथी पर बैठा दिया गया—

प्रस्थान करो।

महाराज विक्रम सिंह जिन्दाबाद।

कुछ दूर पहुंचते ही बांकेलाल एकाएक त्योराकर जमीन पर गिर पड़ा—
अरे! बांकेलालजी को क्या हुआ?
आ...ह!
??
आह! महामंत्रीजी। मैं शायद बारात के साथ न चल सकूंगा। आप मुझे महल भिजवा दें।
ओह, ठीक है, बांकेलालजी। मैं आपको महल भिजवा देता हूं!
क्या हुआ बांकेलालजी को?
महाराज! बांकेलाल की तबीयत यकायक खराब हो गई है। मैं इन्हें महल भिजवा रहा हूं।
ओह! फिर तो यह विवाह भी आज नहीं होगा।
यह सुनते ही बांकेलाल चीखकर बोला—
नहीं महाराज, अब यह विवाह नहीं रुक सकता। आप दुल्हन लेकर लौटिये, ईश्वर ने चाहा तो मैं एकदम भला-चंगा होकर महल में आपका स्वागत करूंगा। आह!
तभी महामंत्री के कहने से एक रथ वहां आ पहुंचा। बांकेलाल को उस रथ पर बिठा दिया—
अपना ध्यान रखना बांके।
आप मेरी फिक्र मत करें महाराज आ...ह
रथ उसे लेकर वापिस महल की ओर चल पड़ा—
शुक्र है, जान बची। केवल मैं ही जानता हूं कि कोशालपुर युद्धस्थल बननेवाला है। ऐसे में वहां जाना मौत को दावत देना था।

उधर चन्द्रनगढ़ में काफी समय इन्तजार करने के बाद भी जब राजा विक्रमसिंह बारात लेकर नहीं पहुंचे तो—

अब तो लग्न का मुहूर्त भी निकला जा रहा है। लोटनचन्द, तुम जाकर मालूम करो कि बारात अभी तक क्यों नहीं पहुंची ?

जी महाराज! मैं अभी पता करता हूं।

लोटनचन्द एक तेज-तर्रार घोड़े पर सवार हो कर विशालगढ़ की ओर चल पड़ा—

किन्तु अभी वह आधे रास्ते में ही पहुंचा था कि—

अरे! यह तो महाराज विक्रमसिंह की बारात है।

अगर यह तो कौशलपुर जा रही है।

आखिर माजरा क्या है?

उसने निकट से गुजरते एक बाराती से पूछा—

क्यों भाई। यह बारात क्या चंद्रनगढ़ नहीं जा रही ?

चन्द्रनगढ़ ? अरे भलेमानस राजा विक्रमसिंह की बारात तो कौशलपुर जा रही है। महाराज का विवाह राजकुमारी पुष्पलता से होने वाला है।

इतना सुनते ही लोटनचन्द के सीने पर सांप लोटने लगे—
इसका मतलब हमारे साथ धोखा हुआ है।
मैं अभी महाराज चन्द्रनसिंह को सारी स्थिति से अवगत कराता हूं। वे राजा विक्रमसिंह के साथ-साथ कौशलपुर को भी मिट्टी में मिला देंगे।

और फिर चन्दनसिंह के महल में—
क्या? विक्रमसिंह की ये जुर्रत! हम उसे नेस्तनाबूद कर देंगे।
सेनापति!
जी महाराज! आज्ञा कीजिये।

अपनी सारी सेना एकत्रित कीजिये। हम अपनी बेटी के लिये वर ढूंढकर लायेंगे।
जो आज्ञा महाराज!
किन्तु महाराज

इस सब में बहुत समय नष्ट हो जायेगा। लग्न का मुहूर्त निकल गया तो फिर यह विवाह पांच वर्षों तक नहीं हो सकता।
क्या?
मेरी किस्मत में भगवान ने शायद यह दिन देखना नहीं लिखा।

राजा क्रोध में चिल्लाया—
लग्न का मुहूर्त नहीं निकलेगा। महामंत्री जी, राजकुमारी कुरूपलता हमारे साथ ही चलेगी। उसका ब्याह कौशलपुर में राजा विक्रमसिंह के साथ ही होगा।
ठीक है महाराज! मैं अभी सब बंदोबस्त किये देता हूं।

फिर देखते ही देखते राजा चन्द्रनसिंह, राजकुमारी कुसुमलता के साथ एक विशाल सेना लेकर कौशलपुर की ओर चल पड़े–

राजा विक्रमसिंह या तो तुझे मेरी बेटी की मांग में सिन्दूर भरना होगा अन्यथा हम तेरे खून से अपने माथे पर तिलक लगाएंगे।

कौशलपुर में सारी तैयारियां पूरी हो चुकी थीं। बारात के पहुंचने पर बारात का भव्य स्वागत किया गया–

राजा विक्रमसिंह जिन्दाबाद

राजा कुशल सेन... अमर रहें।

जय-जयकार से गगन गूंज उठा।

विवाह की रस्म अदा होने वाली थी कि तभी समाचार मिला–

अशुभ समाचार है महाराज! चन्द्रनगढ़ के राजा चन्द्रनसिंह ने कौशलपुर पर चढ़ाई कर दी है। वह अपनी विशाल सेना के साथ इधर ही आ रहे हैं महाराज।

क्या इस शुभावसर पर ऐसा अशुभ समाचार!

यह तो बहुत बुरा हुआ।

अब क्या होगा विक्रमसिंहजी! युद्ध की तैयारी में तो बहुत समय लग जायेगा और तब तक शायद...

काश! मेरा बांकेलाल यहां होता तो वह अवश्य ही इस समस्या का कोई उपाय सोच लेता।

आप क्या सोच रहे हैं विक्रमसिंह जी?

हम सोच रहे हैं महाराज कि कौशलपुर की इज्जत अब हमारी इज्जत है। चन्दनसिंह से युद्ध की तैयारी की जाये। हम स्वयं भी युद्ध लड़ने चलेंगे।

??

फिर जितना भी इन्तजाम हो सका, उतनी ही सेना लेकर राजा कुशलसेन, विक्रमसिंह के साथ रणभूमि की ओर चल पड़े—

दोनों सेनाएं आमने-सामने पहुंच गईं। तभी राजा चन्दनसिंह गरज पड़े—

राजा विक्रमसिंह! धोखे बाज। हमारी बेटी का विवाह प्रस्ताव मंजूर करके और फिर निश्चित समय पर बारात चन्दनगढ़ न लाकर तुमने हमारा ही नहीं, बल्कि राजा कुशलसेन का भी अपमान किया है।

कुसुमलता से विवाह??

कुसुमलता

राजा कुशलसेन! विक्रमसिंह का विवाह राजकुमारी पुष्पलता से नहीं, राजकुमारी कुरूपलता से तय हुआ है। अगर वायदे के मुताबिक यह विवाह न हुआ तो यहां रक्त की नदियां बह जाएंगी।
कुरूपलता का नाम सुनकर राजा कुशलसेन चौंक पड़े थे—
उफ्। कहीं यह वही मेरी नन्ही सी कुरूपलता तो नहीं।
महाराज! सोच क्या रहे हैं? युद्ध का बिगुल बजवा दीजिये।
राजा चन्दनसिंह को जब अपनी बात का कोई जवाब न मिला तो उन्होंने चीखकर आदेश दिया—
युद्ध!! आक्रमण!
??
नहीं ठहरो!
कुशलसेन ने चीखकर कुछ कहना चाहा।...
...परन्तु, तब तक शोर मचाते सैनिक कुशलसेन की सेना पर टूट पड़े। मजबूरन कुशलसेन की सेना भी युद्ध में शामिल हो गई—
मारो मारो
काट डालो
नहीं, यह युद्ध नहीं होगा। महावत, हाथी को राजा चन्दनसिंह के हाथी के निकट ले चलो।
खच्च

चन्दनसिंह के हाथी के निकट पहुंचकर राजा कुशलसेन ने चीखकर कहा–

राजा चन्दनसिंह ! अगर आपकी इच्छा युद्ध की हो तो अवश्य युद्ध होगा, किन्तु हम केवल तीन प्रश्नों का उत्तर जानना चाहते हैं।

!!

?

... क्या आपकी बेटी कुरूपलता की एक टांग नहीं है ?

क्या उसकी पीठ पर एक कूबड़ है ?

क्या उसकी दाईं बाजू पर उसका नाम गुदा है ?

परन्तु आप यह सब कैसे जानते हैं ?

इसका मतलब है मैंने जो कहा सच है!

तब तो यही मेरी खोई हुई बेटी है। एक ऋषि के शाप के कारण न केवल इसकी शक्ल बनी, बल्कि ये हमसे पूरे अठारह बरस तक अलग रही।

और चन्दनसिंह। अब जब इसके शापमुक्त होने का समय आया है तो तुम युद्ध करना चाहते हो।

हां, चन्दनसिंह। हमारी बड़ी बेटी कुरूपलता का विवाह राजा विक्रमसिंह के साथ ही होगा। यह हमारा वायदा है।

तब तो हमें तुरन्त युद्ध बन्द करना होगा।

आज से अठारह बरस पूर्व की बात है। उन दिनों हम अपनी नवविवाहिता पत्नी के साथ रोजाना शिकार खेलने जाया करते थे। लेकिन एक दिन जब हमने एक स्वरगोश का शिकार करने के लिए तीर छोड़ा–

हे भगवान। लगता है आपका छोड़ा हुआ तीर किसी बालक को लगा है।

आह !

अरे ! यह तो किसी बच्चे की चीख का स्वर है।

...हमने उधर जाकर देखा तो सचमुच एक बालिका वहां छटपटा रही थी–

ओह भगवान। इसकी टांग तो तीर से लगभग कट ही गई है। अब क्या होगा महाराज ?

ऋषि कन्या!

...तभी ऋषि चतुरानन्द वहां आ पहुंचे और अपनी बेटी की ये दशा देखकर वे क्रोध से चिल्ला पड़े—

दुष्ट! तूने मेरी मासूम बच्ची की यह हालत की है। जा मैं तुझे शाप देता हूं। तेरी जुड़वां बेटियों में से एक बेहद कुरूप, लंगड़ी व कुबड़ी होगी। और तुझे उसका विद्रोह सहना होगा।

नहीं! क्षमा महाराज, हमसे यह भूल अनजाने में हुई है।

अपना शाप वापिस ले लीजिये मुनिवर।

पत्थर से गिरने के कारण तब तक ऋषिकन्या की मृत्यु हो चुकी थी।

हम ऋषि चतुरानन्द के आगे बहुत रोये-गिड़गिड़ाये अन्ततः जब उनका क्रोध शांत हुआ तो वे बोले—

जा। जिस दिन तेरी बेटी दुल्हन बनेगी, उसी दिन फिर तेरा उससे मिलन संभव होगा। और जब उसका दुल्हा उसके गले में पुष्पमाला डालेगा, वह ठीक हो जायेगी।

प्रसव के पश्चात् मेरी पत्नी दो बच्चियों को जन्म देकर सिधार गई—

आ...ह!! यह क्या हो गया?

हमने उसी दिन दोनों राजकुमारियों के दायें बाजुओं पर उनका नाम गुदवा दिया था—

उसी शाम अचानक एक हादसा हो गया। एक बाज पालने में से कुरूपलता को ले उड़ा—

अरे पकड़ो! मारो उस बाज को! वह राजकुमारी को ले जा रहा है।

किन्तु हमारे सैनिक उस बाज को नहीं पकड़ पाए और आज इसे दुल्हन के रूप में देखकर हमें ऋषि की वाणी याद आ गई।
फिर तो यह आपकी ही बेटी है महाराज मुझे उस समय मिली जब...

...हम कई बरस तक सन्तान नहीं पाने के कारण दुखी होकर शिव की शरण में गए—
हे शिव, शंकर! हमें सन्तान सुख दो प्रभु!

बच्ची!
अरे!

हमने अपनी पत्नी की मृत्यु के पश्चात भी उस बच्ची को शिव का वरदान समझकर पाला-पोसा। और कल जब राजा विक्रमसिंह...
... का संदेश हमें मिला कि ये कुरूपलता से विवाह करने के लिये तैयार हैं तो हम प्रसन्नता से पागल हो उठे।

परन्तु जब बारात चन्दनगढ़ आने की बजाय कौशलपुर जाने लगी तो हमें उतना ही क्रोध भी आया। और हम कौशलपुर पर चढ़ाई कर बैठे।
आप महान हैं चन्दनसिंह जी। आपने मेरी बच्ची को अपनी संतान की तरह पाला है।
दीदी!
मेरी बहन!
और तभी पुष्पलता ने वहां पहुंचकर कुरूपलता को गले लगा लिया।

परन्तु हमारी समझ में नहीं आया कि ऐसा संदेश जब हमने नहीं दिया ही तो...
तब चन्दनसिंह ने गुप्तचरों का किस्सा भी सुना डाला और अपनी इस हरकत की क्षमा भी मांग डाली।

गुप्तचर लोटन चन्द को बुलाया गया। उसने बताया—

महाराज! गुस्ताखी माफ हो। मुझे यह संदेश बांकेलालजी ने दिया था।

ब... बांकेलालने?

ओह, बांकेलाल, इसका मतलब तुम जानते थे कि हम पर गुप्त आक्रमण चन्दन सिंह करवा रहा है।

हम तुरन्त बांकेलाल जी से मिलना चाहते हैं, जिनकी बदौलत आज हमें हमारी खोई बेटी मिल गई।

किन्तु महाराज! पहले कुरूपलता को शाप से मुक्त होने दीजिए।

तब विक्रमसिंह ने फूलों की माला राजकुमारी कुरूपलता के गले में डाल दी। तुरन्त चमत्कार हुआ—

ओह! मैं अच्छी हो गई।

मेरी बच्ची ठीक हो गई

दीदी ठीक हो गई पिताजी।

तत्पश्चात् सभी विशालगढ़ की ओर चल पड़े—

आज कितना खुशी भरा दिन है। और हमें यह दिन देखना बांकेलाल की बदौलत नसीब हुआ।

आप ठीक कहते हैं महाराज मुझे तो बांके किसी देवता का अवतार महसूस होता है। उसे अवश्य पता था कि कुरूपलता हमारी बेटी है। तभी उसने यह सारा चक्कर चलाया होगा।

इधर बांके उस घड़ी का बेसब्री से इन्तजार कर रहा था, जबकि राजसिंहासन उसे सौंप दिया जाता—

महाराज विक्रमसिंह के पश्चात राज्य में मैं ही अधिक लोकप्रिय हूं। मुझे ही राजा बनाया जाएगा।

किन्तु यह अभी तक दुःख भरा समाचार महल क्यों नहीं पहुंचा?

तभी द्वारपाल ने आकर सूचना दी—

बांकेलाल जी, चलिये। महाराज डोली लेकर महल आ पहुंचे हैं। और वे तुरन्त आपसे मिलना चाहते हैं। उनके साथ राजा चन्द्रनसिंह और कुशलसेन भी हैं।

क्या?

यह सुनते ही बांकेलाल के होश उड़ गए—

यः... यह राजा चन्द्रनसिंह और कुशलसेन? लगता है तेरी चालें खुल चुकीं बेटा बांके।

चलिए बांकेलाल-जी!

मरता क्या न करता। उसे द्वारपाल के साथ चलना ही पड़ा—

भगवान! तूने मेरी किस्मत काली स्याही से क्यों लिखी है? तुझे जवाब देना होगा।

किन्तु जैसे ही बांकेलाल महल के मुख्य द्वार पर पहुंचा। महाराज विक्रमसिंह ने उसे गले से लगा लिया—

यही है हमारा प्यारा बांकेलाल।

बांकेलाल की...

जय।

आंय!

सभी बांकेलाल की जय जयकार कर उठे।

और फिर जब बांकेलाल को हकीकत पता चली तो उसने अपना सिर पीट लिया—

राजसिंहासन हाथ आ जाता तो दूसरा खजाना मेरा होता। उफ्, अगर मुझे पता होता कि यह सब होने वाला है तो मैं कभी महाराज को विवाह के लिए तैयार न करता। बहूहूहू अब मेरा क्या होगा?

तभी एकाएक विक्रमसिंह ने पूछा—

किन्तु बांकेलाल! एक बात हमारी समझ में नहीं आ रही और वो ये कि तुम्हें कैसे पता चला कि कुरूपलता महाराज कुशलसेन की खोई हुई बेटी है और जब कोई उसे वरमाला पहनाएगा, वह ठीक हो जाएगी।

मर गए। अब क्या जवाब दूं। मैंने तो इन सबके क्रियाकर्म की तैयारी की थी।

और अचानक कुछ सोचकर बांकेलाल चुटकी बजाकर उछल पड़ा—

अरे हां! सूझ गई तरकीब, अपना सिर बचाने की।

दूसरे ही पल वह बोला—

महाराज! जिन साधु-महात्माजी ने महाराज कुशलसेन जी को श्राप दिया था। उन्होंने ही मुझे स्वप्न में दर्शन देकर सब कुछ ठीक-ठाक करने को कहा था...

... और यह भी कि महाराज विक्रमसिंह से बढ़िया वर कुरूपलता के लिए हो ही नहीं सकता। बस फिर मैंने झट से आपके विवाह की योजना बना डाली!

वाह बांके! तुमने तो सचमुच कमाल कर दिया।

यह सब सुनते ही सब बांकेलाल की जय-जयकार कर उठे, जबकि बांके अपनी किस्मत को कोस रहा था—

बांकेलाल

जिन्दाबाद।

बांकेलाल मुर्दाबाद कहो कमबख्तो। सारी बनी-बनाई योजना चौपट हो गई।

समाप्त